नागार्जुन की दृष्टि और प्रगतिवाद

डॉ0 अनिता कुमारी

प्रगति शब्द का अर्थ है आगे बढ़ना, उन्नति करना। प्रगतिवाद समाज, साहित्य आदि कि निरन्तर उन्नति पर जोर देने का सिद्धांत है। साहित्य के संदर्भ में यह साहित्य का एक आधुनिक सिद्धांत है, जिसका लक्ष्य जनवादि शक्ति को संपादित कर मार्क्सवाद तथा भौतिक यथार्थवादी ध्येय की संपूर्ति करना है। हिन्दी साहित्य कोश, भाग 1 में प्रगतिवाद के संबंध में लिखा गया है–प्रगतिवाद सामाजिक यथार्थवाद के नाम पर चलाया गया वह साहित्यिक आंदोलन है जिसमें जीवन और यथार्थ के वस्तु सत्य को उत्तर छायावाद काल में प्रश्रय मिला और जिसने सर्वप्रथम यथार्थवाद की ओर समस्त साहित्यिक चेतना को अग्रसर होने की प्रेरणा दी। प्रगतिवाद का उदेश्य साहित्य में उस सामाजिक यथार्थवाद को प्रतिश्ठित करना, जो छायावाद के पत्तनोमुख काल की विसंगतियों को नष्ट करके एक नये साहित्य और नये मानव की स्थापना करे और उस सामाजिकि सत्य को, उसके विभिन्न स्तरों को साहित्य में प्रतिपादित होने का अवसर प्रदान करे।

नागार्जुन का साहित्य और कविता इसका जिता जागता उदाहरण है। उत्तरछायावाद युग में अनेक कवि प्रगतिवाद के जीवन आदर्श से प्रेरित हुए। इसमें प्रमुख हैं– नरेन्द्र शर्मा, शिवमंगल सिंह सुमन , केदारनाथ अग्रवाल रांगेय राघव प्रगतिवाद के तरूण कवि नागार्जुन तो प्रगतिवाद के एक हस्ताक्षर हैं। शम्भुनाथ सिंह गिरीजाकुमार माथुर , भारतभूशण अग्रवाल गोपालदास नीरज, रामविलास शर्मा प्रगतिवादी काव्यधारा के उसमें एक उदाहरण हैं।